भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 21 अंक : 10 | सोमवार, 26.10.98 | वार्षिक चंदा : 50.00

ब्रह्मप्रवाह

प्रगटपन का भाव और बुद्धि की जड़ता

जीवसत्ता एवं ईश्वरसत्ता पर चलती आ रही प्रणालिकाओं
और
दृढ़ हो चुकी मान्यताओं तथा परोक्षभाव की
पूजा, सेवा, भजन, कीर्तन और व्यावहारिक क्रियाएँ
प्रकृति पुरुष तक के महान क्षेत्र में
हर एक जीव के ज्ञान,
अनुभव और उसके मुताबिक ही
कर्मयोग पर चलते रहते हैं।
अनादि काल से ऐसी जड़ प्रकृति वाली क्रियाएँ
प्रगट भगवान या तो उनसे मिले साक्षात् भगवत्स्वरूप संत के पास भी
सब अपनी-अपनी दृढ़ हो चुकी ग्रंथियों में रहकर
यदि चला करें, उसमें बदलाव ही नहीं ला सकते;
या
ऐसा सच्चा प्रयत्न करके प्रगट स्वरूप को पहचान कर
अंतर्दृष्टि करके निष्कपटभाव से वर्तने का प्रयास नहीं करा जाता,
तो–
प्रगटपन के भाव को पहचाना ही नहीं
ऐसा स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है।
ऐसे प्रगट स्वरूपों को श्रीजी महाराज पांच सौ परमहंसों के रूप में
'साक्षात् दिव्य शक्तियाँ' लाए
और
खूब विचरण करके,
अनेक प्रसंग योजित करके,
उत्सव समेत सत्संग सप्ताहें कर-करवा कर
लाखों मुमुक्षुओं को
प्रगट दिव्य स्वरूपों का महा संबंध करवा दिया।
फिर भी,
केवल बुद्धि की जड़ता के कारण
उन स्वरूपों में शुद्धभाव से जुड़ने में कसर रह गई
और
उसके परिणाम स्वरूप ही दिव्य स्वरूपों की सेरेछाया में रहने के बावजूद
अनेक चमत्कारों–शक्तियों का अनुभव करने के बावजूद
हठ, मान, ईर्ष्या और कपट जीवन के अंत तक रह गए–
जो अंतर्दृष्टि करने पर सभी को दिखाई पड़ेगा।
ऐसी मायिकभाव की दृष्टि
बुद्धि की जड़ता के कारण ही टलती नहीं
और
प्रत्यक्ष संत के समागम का दिव्य सुख अनुभव नहीं कर सकते।
श्रीजी महाराज ने कई प्रकरण बदले
और
जहाँ बुद्धि तत्त्व अटक जाता है,
कोई भी रास्ता दिखाई ना पड़े,
कोई भी उपाय ना सूझे–
ऐसे प्रसंगों में कठिन से कठिन कार्य चुटकी में करके दिखाये,
प्रतीतियाँ कराईं.....
फिर भी प्रत्यक्ष दिव्य स्वरूपों के प्रति का मायिकभाव संपूर्ण टल नहीं सका।
सो ही–
संत समागम पर ज़ोर डाल कर
महाराज ने ब्रह्म के स्वरूप का यथार्थ ज्ञान आसान बनाया
और
ऐसे प्रत्यक्ष संतवर्य द्वारा एकांतिक धर्म खुल्ला रख कर
उनके असाधारण प्रसंग में सभी के लिए ही सुलभ बनाया
(वरताल 5, 3, 11, अंत्य. 2 के मुताबिक)।
हमारे सद्भाग्य से भगवत्स्वरूप संतवर्य प.पू. योगीजी महाराज

को हमने पहचाना है,
सो–उनके प्रसंग में रह कर
अक्षरधाम का निर्गुण सुख प्राप्त कर लेने के लिए ही
हर एक को अब पुरुषार्थ दृढ़ करना रहता है।
आत्यांतिक कल्याण के दाता ऐसे संत में अखंड दिव्यभाव रहे
यही प्रयत्न करते रहना है–
जिससे जीव ब्रह्मरूप होकर
जीतेजी स्वामिश्रीजी के स्वरूप में जुड़ सके
और
भगवान का दिव्य सुख सरलता से प्राप्त कर सके।
हमने ऐसे संत की महिमा,
अनेक दिव्य मंगलकारी गुण, चरित्र, करिश्मे
और
भावनाओं को देखा है
तथा
जहां बुद्धि काम ही ना कर सके,
परेशान हो जाए–
वहां उनके सान्निध्य में–
केवल दृष्टिमात्र से ही अनेक कठिन कार्य हल होते देखे हैं।
सो अब अति उत्तम मुक्त दशा प्राप्त कर लेने का यह
अनमोल अवसर है।
तो इस संत की आज्ञा में पल-पल वर्त कर सभी
दृढ़ ठहराव कर लें।
व
उसके मुताबिक वर्तने का प्रयत्न कर लें।
तभी प्रगटपन को पहचाना कहा जाए
और
कुशाग्र बुद्धिवाला गिना जाए
तथा
ब्रह्मज्ञान आसानी से जीतेजी प्राप्त हो सके।
सभी को ऐसी दिव्य बुद्धि प्राप्त हो यही नम्र प्रार्थना है।

–प.पू. काकाजी महाराज
दिसम्बर, 1958

✡✡✡✡✡

ॐ नमः स्वामिनारायणाय.....

विक्रम संवत 1858 की मागशर वद एकादशी भगवान श्री स्वामिनारायण के आश्रितों के लिए परम पवित्र व ऐतिहासिक तिथि..... इसी दिन भगवान स्वामिनारायण ने राजकोट के 'फणेणी' गाँव में पहली बार सभी साधुओं-सत्संगियों को 'स्वामिनारायण' महामंत्र का श्रद्धासहित भजन-जाप करने का आदेश दिया।

विक्रम संवत 2058 की मागशर वद एकादशी के शुभ दिन स्वामिनारायण महामंत्र के प्रार्दुभाव को 200 वर्ष पूरे होंगे यानि 'स्वामिनारायण ' महामंत्र का द्विशताब्दी महापर्व....

'स्वामिनारायण' महामंत्र की अपार व अचूक शक्ति के अनेक अनुभव पिछले 200 साल से श्री स्वामिनारायण के आश्रितों-सत्संगियों-साधकों को अनेक रुप में हुए हैं। फिर चाहे वह आत्मिक विकास के रूप में, व्यावहारिक-मानसिक उलझनों के सुलझने के रूप में और यहां तक कि शारीरिक कष्टों से त्वरित मुक्ति पाने में भी इस महामंत्र की अनहद् शक्ति का सभी ने व्यक्तिगत रूप से अनुभव किया है। श्री स्वामिनारायण के आश्रित आधि- व्याधि, जादू-टोना, ग्रह-पनौती, ज्योतिष एवं तांत्रिक विद्या, भूतप्रेत, काल-कर्म-माया आदि से डरे हुए कभी नहीं दिखाई पड़ेंगे..... बल्कि हर विपरीत संजोगों में वे केवल 'स्वामिनारायण' महामंत्र का ही एकमात्र आधार लेते दिखाई पड़ेंगे। **प्रगट भगवत्स्वरूप संत द्वारा इस जीवंत मंत्र के कारण बहुत ही निश्चिंत व निर्भय जीवन जीते ही दिखाई पडेंगे।**

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी ने भी अपनी बातों में स्वामिनारायण महामंत्र की विशेषता पर बारी-बारी अत्यधिक जोर देकर कहा है.....

- स्वामिनारायण नाम के मंत्र जैसा अन्य कोई मंत्र आज बलवान नहीं है। इस मंत्र का जाप करने से काले नाग का ज़हर नहीं चढ़ता व इस मंत्र से विषय उड़ जाते हैं। जीव ब्रह्मरूप हो जाता है। काल, कर्म, माया का बंधन छूट जाता है। ऐसा बहुत बलवान यह मंत्र है। इसलिए निरन्तर भजन किया करना।

(प्रकरण-1 की 154)

- भजन करते-करते क्रिया करें तो अतंर में शांति रहेगी और हृदय में शांति देखकर बड़े साधु प्रसन्न होंगे व जिस पर बड़े संत प्रसन्न होंगे उसकी आत्मा भी सुखी हो जायेगी।

(प्रकरण-3 की 32)

- स्वामिनारायण मंत्र का जाप करने से रोग टल जाता है, यदि सांप ने काटा हो तो उसका ज़हर उतर जाये व काल, कर्म, माया से मुक्त होते हैं।

(प्रकरण-5 की 132)

इस महामंत्र को जब दो सौ वर्ष पूरे होने जा रहे हैं, तो उस उपलक्ष्य में समग्र स्वामिनारायण संप्रदाय में इस महामंत्र के लेखन की शुरुआत हो गई है और हम सभी को मंत्रलेखन के साथ-साथ आंतरिक भजन-प्रार्थना द्वारा अखंड शांति के मार्ग पर चलाने का प्रगट गुणातीत स्वरुपों का संकल्प है। तो जब 21वीं सदी की मंगल प्रभात आहट पर है तो सभी स्वरूपों की अन्तर की इच्छानुसार हम सब भगवान व संत के संबंध से, जीवन में उन्हें ही प्रथम स्थान देकर तन,मन,धन व आत्मा से सुखी हों और निरन्तर स्मृति में रहकर भजन किया करें.....

और इस हेतु–

- श्रद्धा व भक्ति से रोज कम से कम 200 'स्वामिनारायण' महामंत्र अवश्य लिखें.....
- महामंत्र लेखन खुद को अनुकूल होती किसी भी भाषा में लिखें, लेकिन शुरुआत से अंत तक एक ही भाषा का उपयोग करें।
- मंत्रलेखन के लिए ' मंत्रपोथी ' अशोक विहार मंदिर–दिल्ली से नए वर्ष से यानि-1999 जनवरी से उपलब्ध हो पायेगी।
- मंत्रलेखन लाल या ब्ल्यू स्याही से करें।
- एक ही मंत्रपोथी में परिवार के सभी सदस्य यह महामंत्र लिखें–उसकी बजाय परिवार के सभी सदस्य अपनी अलग-अलग मंत्रपोथी में महामंत्र लिखें।
- मंदिर से जब तक सूचना नहीं मिले तब तक सत्संगी जन मंत्र लिखी हुई मंत्रपोथी अपने पास ही रखें और सूचना मिलने पर मंत्रपोथियाँ अशोक विहार मंदिर भेजी जायें।

प्रभु के अखंड धारक ऐसे संतो की आज्ञा से हम यह मंत्र लिखेंगे तो इसके फलस्वरूप हमारे जीवन में नित्य नए अनुभव होंगे..... हमारे आसपास प्रभु की सत्ता का अनुभव होगा। रोज़मर्रा की समस्याओं का समाधान होता दिखाई पड़ेगा व सुख-शांति-आनंद के हम भोक्ता बनेंगे।

✡✡✡✡✡

'श्रवण, मनन और निदिध्यासन'

✷ प.पू. काकाजी ने सबसे पहले हमें बताया कि संकल्प का उठना भी एक बीमारी है। मैं यह करूँ–वो करूं; या तो मंदिर मार्बल का हो जाये, सोने का हो जाए– पूरा एयर कॉन्डीशनिंग करेंगे वगैरह सारी संकल्प की बीमारी है। हमें तो बस हर एक के चैतन्य पर महाराज की मूर्ति प्रगटा देनी है। प.पू. काकाजी का यह मिशन था। गुरुहरि योगीजी महाराज के हृदयगत अभिप्राय को समझी हुई वो विभूति थी कि–बापा ने संस्था से हमें क्यों अलग किया? असल में तो अलौकिक भूमिकाओं को चूर-चूर करके भगवान अखंड बसा लेने हैं..... साधु के जेवर यानि–कल्याणकारी गुण प्रगटा लेने हैं।

✷ संकल्प पूरा होने पर हमारा अभिमान बढ़ जाता है। दस जनों को जाकर बोलेंगे कि देखा, हमारे स्वामी ने हमारा यह काम कर दिया !

✷ स्वरूप के साथ अखंड आध्यात्मिक संबंध बनाने की ही तान रखनी चाहिए। हमें और चीजों की तान रहती है।

✷ पू. बापू ने प.पू. काकाजी के बारे में एक पत्रिका लिखी है जो पढ़कर स्पष्ट दर्शन होता है कि हमने प.पू. काकाजी को कितना गलत समझा था ! उनके गुस्से को–उनके उतावलेपन का वेल्युएशन को हमने पूरे गलत ढंग से लिया। पू. बापू ने उसमें वो समझाया है कि वे इसलिए उतावले थे कि कहीं हमें लेने में देरी ना हो जाए। उनका गुस्सा–वो जो हमें डांटते थे वो कोई गुस्सा नहीं था बल्कि उनकी एक तरस थी कि इन बातों को तुम ले जाओ। हम ले क्यों नहीं लेते? वो दर्द था उन्हें!

✷ बड़ों का वचन आमतौर पर तो हम मान लेते हैं, पर जब अपने मन, वृत्ति, अहम्, स्वभाव को साधु छेड़ देता है तब हम बड़ों का वचन नहीं मान पाते। पर अगर उस समय मान लें तो बोनस में हमें कितनी अपलिफ्टमेन्ट मिल जाती है। उसका हमें ख्याल नहीं है, सो हम अकड़ में–ज़िद्द में रहते हैं।

✷ जब कभी हम भीतर से डिस्टर्ब हों और तब भी साधु का कोई वचन मान लेंगे तो भारी अनुभव होंगे। भीतर में जो हम भुनते रहते हैं, जलते रहते है; अन्दर बोझ जैसा लगता है, उदासी जैसी बनी रहती है वो फट् निकल जायेगी।

✷ ध्यान भगवान की मूर्ति का करना है और सेवा-समागम संत का करना है। यह प.पू. काकाजी ने अक्षरपुरुषोत्तम की युगल उपासना बता दी। हम संत के नज़दीक ज्यादा नहीं रहते, क्योंकि संत हमारा मन तोड़ने का काम करता है।

✷ उपजी समावे–वो संत। मानो विचार उठें–गलत भावनाएं उठें; कुछ गलत करने का मन हो, पर वह नहीं करना है.... यूं संकल्पों को दबा दे–वह संत।
ना उपजे–सो भगवंत। भगवान के स्वरूप को तो कोई संकल्प उठे ही नहीं।
हमें कम से कम संत तो बन ही जाना है। ऐसे विचार आएं लेकिन उनमें बह नहीं जाना है।

✷ हमें सत्संग में बड़प्पन पाने की चाहना रहती है कि मुझे भी सभी मानें और उसके लिए कोशिश भी करते रहते हैं। पर वो छोड़कर यदि भगवान रखेंगे; उनकी मर्जी में रहेंगे तो अपने आप सब मान-मर्तबा मिलता जाएगा।

✷ हमारे चित्त पर कई जन्मों के मलिन संस्कार के धब्बे पड़े हुए हैं। ऐसे स्वरूप मिलने पर उनसे सफाई करा कर यानि–चित्त की शुद्धि करा कर पूर्णाहुति करा लें। चित्त की शुद्धि–मन की शुद्धि हमारे करने से नहीं होगी। संत के पास दीन-आधीन रहकर भजन करके उससे करा लेनी पड़ती है।

✷ अपना प्रॉसेस ऐसा नहीं कि हम साधना करें, पर हम भजन किया करें और वो हमारा सारा काम किया करेंगे। भगवान कृष्ण ने गीता में जो कहा कि–तुम्हारा योग और क्षेम मैं वहन करूँगा उसका अर्थ हम यह समझते हैं कि हमारी दुकान अच्छी चले और हमारे घर में सब अच्छा रहे।

✷ संत के प्रति अखंड दिव्यभाव रखने भी गद्गद् कंठ से प्रार्थना ही करनी पड़ती है। बौद्धिक ढंग से दिव्यभाव

रखने जायेंगे तो वे ऐसा चरित्र कर देंगे जो हमारी बुद्धि में फिट ही नहीं बैठेगा।

✷ जिन-जिन्हें ऐसे गुणातीत स्वरूप ने संबंध में लिये हैं, उन्हें हम भगवान की मूर्ति मानें। वे हर एक को उनके जैसा बना कर ही छोड़ने वाले हैं। वह चालू–लल्लू जैसे ही क्यों दिखाई ना पड़ते हों–उनके स्वभाव, प्रकृति चाहे कैसे भी दिखाई पड़ते हों पर वो एक ना एक दिन ब्रह्मस्वरूप बनने वाला है। सो, उसकी महिमा बाद में भी समझनी ही पड़ेगी। तो पहले से ही क्यों ना समझ लें?

✷ पहले हमें अपना खुद का ही पूरा कर लेना है। पर, प्रॉब्लम यह है कि हम दूसरों का पूरा कराने की झंझट में ही लगे रहते हैं।

✷ हमारी प्रगट की उपासना है। अपने भगवान धरती पर मानवस्वरूप में प्रगट हैं; इसलिए सब इतना आसान है। हमें भगवान ढूंढने दूर नहीं जाना है। हमने प.पू. काकाजी के रूप में देखे..... अभी प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. दिनकरभाई के रूप में हैं–इमीडियेट कॉल लग जायेगी। यह डवलॅपमेन्ट हुई है। आज से दस साल पहले ट्रंककॉल करना होता था तो बुक कराना पड़ता था, कितना जोर से बोलना पड़ता था और अब फट् लग जाता है। जैसे साईन्टीफिक डवलॅपमेन्ट है, वैसे सहजानंदस्वामी ने जगह-जगह आई.एस.डी.–एस.टी.डी. के बूथ रखे हुए हैं।

✷ दूसरे का दिखाई तो पड़ेगा–विचार भी आयेंगे पर दिव्यता ही पकड़े रखनी। दिव्य के सभी दिव्य। जैसे करोड़पति का लड़का करोड़पति–वैसे हमारे भगवान दिव्य हैं, सो–उसके संबंध वाले सब दिव्य हैं। यह आशीर्वाद भीतर की सच्चाई से रो-रोकर मांगने पड़ते हैं।

✷ महाराज ने ग.म. 45 में 200 साल पहले कहा है कि जो मेरे कहलाये जाते हैं उनमें मैं रत्तीभर भी कसर नहीं रहने दूंगा। जो 200 साल से पीछे पड़े हैं वे अब हमें छोड़ देंगे क्या? इस वचनामृत में महाराज ने हम सब के प्रति अपना अत्यधिक लगाव बताया कि मैं यदि कड़े होकर तुम्हें वर्ताऊँ नहीं और तुम कुछ गफलत में वर्तो वो मुझ से देखा नहीं जायेगा। अपना लड़का बेहुदा वर्तता हो तो क्या माँ-बाप देख पायेंगे? माँ-बाप उसे किसी भी तरह डाँट कर भी समझायेंगे।

✷ हम सभी 200 साल पहले से ही इन गुणातीत स्वरूपों के संबंध में हैं। सो, हम सभी पुराने हैं। कोई खुद को नया ना माने। महाराज हमें छोड़ने वाले तो हैं ही नहीं क्योंकि 200 साल से वे हमारे पीछे लगे हैं पर, हम अगर धीरे-धीरे चलेंगे तो देरी हमें ही होनी है।

✷ कोई दो भक्तों की आपस में तू-तू, मैं-मैं हो जाये तो बीच में मत पड़ना। वो जाने, भगवान जाने। हाँ, यदि एक को हम से लगाव हो तो उसे समझना कि तू यह माथापच्ची छोड़कर भगवान का भजन कर। पू. ज्योति बहन में तुम्हें यह चीज देखने को मिलेगी।

✷ कोई विचार उठे तो तीन बार छोड़ देना। तीन बार यानि–इन्द्रियाँ, अंतः करण, जीव में से पार होने देना। फिर स्वामिनारायण-स्वामिनारायण करके वह कर देना। फिर हमारी गल्ती नहीं होगी, क्योंकि हम सिन्सियर रहे।

✷ प.पू. काकाजी ने सारे गुणातीत समाज को अपना समझा। सब मेरे ही हैं। हर एक केन्द्र को अपना माना। वे जिस भी सेन्टर में गए... मंदिर में गए-ग्रुप में गए वहां इन्होंने अपना अलग प्लेटफार्म तैयार नहीं किया। कोर्निरिंग नहीं करा। स्ट्रेजी या गेम्स उन्होंने कभी नहीं खेले। बल्कि जहां गए वहां उस स्वरूप की दिल से महिमा गाई। कहीं से कोई टूट कर-मन मुटाव होने के कारण यदि उनके पास आया भी, तो उन्होंने उसे खुद में कभी नहीं जोड़ा, बल्कि जहां से वह उदास हुआ हो वहीं पहले जैसा ही उसे जोड़ा। वो कोई अलग-अलगारी मूर्ति थी। (क्रमशः)

व्रतोत्सवसूची

(1) दि.31.10.98 शनिवार–प्रबोधिनी, एकादशी व्रत
(2) दि.14.11.98 शनिवार–एकादशी, व्रत

TO,

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Monthly Magazine
Despatched on 25/26 of every month
If undelivered please return to :—
Owner, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
Anirdesh, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Type Setting : **SHAYOKA Type Setting**
B-351, Sect.-I, Rohini, Delhi-85
Printed at : **Bharat Packaging and Allied Industries**
C-2/12, Mayapuri Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110 064
Tel.: 5401210, 5402393